उपभोक्ता की बचत

Consumer's Surplus

Online Teaching

Class: B.A.-I

Dinesh Kumar Gupta
Assistant Professor (Economics)
Government Degree College Banbasa.
E-mail : economicsdkg@gmail.com

उपभोक्ता की बचतः– Consumer's Surplus

उपभोक्ता की बचत की विचारधारा प्रो0 मार्शल द्वारा प्रतिपादित कल्याणवादी आर्थिक विश्लेषण में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं सर्वप्रथम इस विचारधारा की व्याख्या 1844 में फ्रांस के इन्जीनियर अर्थशास्त्री ड्यूपिट (Dupit) ने की। पर प्रो0 मार्शल से पहले इसका कोई वैज्ञानिक तथा व्यवस्थित रूप सामने नहीं आया, 1879 में मार्शल की पुस्तक Pure Theories of Domestice Values प्रकाशित हुई जिसमें सर्वप्रथम उन्होने इस विचारधारा का प्रतिपादन किया तथा इसे उपभोक्ता का लगान (Consumer's Rent) कहा। पर इसका और अधिक स्पष्टीकरण सन् 1890 में उनकी प्रसिद्ध पुस्तक (Principles of Economics) में हुआ जिसमें उन्होने ही इसे उपभोक्ता की बचत का नाम दिया इस प्रकार इसे वैज्ञानिक व्यवस्थित तथा लोकप्रिय सिद्धान्त के रूप में इसका प्रतिपादन तथा स्पष्टीकरण मार्शल द्वारा किया गया अतएव प्रो0 मार्शल को इस सिद्धान्त का जन्मदाता मानना गलत नहीं होगा।

इस सिद्धान्त की व्याख्या दो रूपों में की जा सकती है–

(क) वस्तु की उपयोगिता के संख्यात्मक माप पर आधारित मार्शल का दृष्टिकोण।

(ख) वस्तु की उपयोगिता के क्रम वाचक माप पर आधारित हिक्स का दृष्टिकोण।

(क) उपभोक्ता की बचत का मार्शल का दृष्टिकोण (संख्यात्मक माप पर आधारित या जब उपयोगिता मापनीय हो)–

मार्शल के अनुसार '' किसी वस्तु को बिना प्राप्त किये हुए रहने की अपेक्षा वह मूल्य, जो एक व्यक्ति उस वस्तु के लिए देने के लिए तैयार रहता है और जो मूल्य वह वास्तव में देता है, उन दोनों का अन्तर ही उपभोक्ता ही उपभोक्ता की बचत कहलाती है। इस प्रकार किसी वस्तु के बाजार मूल्य पर उस वस्तु की उपयोगिता का आधिक्य ही उपभोक्ता की बचत है।

अतः यह कहा जा सकता है कि किसी वस्तु से मिलने वाली सी0उपयोगिता तथा उस वस्तु को प्राप्त करने के लिए त्यागी गई उपयोगिता का अन्तर ही उपभोक्ता की बचत है। प्रो0 मेहता ने उपभोक्ता की बचत के संबंध में अपना मत इसी आधार पर दिया। **प्रो0 मेहता के शब्दों में किसी वस्तु के उपभोग से प्राप्त होने वाली सन्तुष्टि और उस वस्तु को प्राप्त करने के लिए किये गये त्याग के अन्तर को ही उपभोक्ता की बचत कहते है। सूत्र के रूप मे –**

(क) उपभोक्ता की बचत (उपयोगिता के रूप में) = वस्तु से मिलने वाली कुल उपयोगिता – उस वस्तु पर व्यय किये हुए द्रव्य के रूप मे कुल उपयोगिता का त्याग।

(ख) उपभोक्ता की बचत (द्रव्य या मुद्रा के रूप में) = द्रव्य की वह मात्रा जो उपभोक्ता देने के लिए तत्पर है – वस्तु के क्रय पर खर्च की गई द्रव्य की कुल मात्रा।

(ग) उपभोक्ता की बचत = सीमान्त उपयोगिता का योग – (खरीदी गई वस्तुओं की संख्या x कीमत) जो हम प्राप्त करते है और जो हम वास्तव में छोड़ते है इनका अन्तर ही उपभेक्ता की बचत है। उपभोक्ता की बचत हमेशा धनात्मक होगी, कभी ऋणात्मक नहीं क्योंकि कोई व्यक्ति उपयोगिता से अधिक मूल्य देगा ही नहीं।

उपभोक्ता किसी वस्तु को प्राप्त करने के लिए जो भी उसके बदले में चुकता करने को तैयार है और जो वास्तव में चुकता करता है, इन दोनो का अन्तर ही उपभोक्ता की बचत है।'

रेखाचित्र में PL मूल्य रेखा या व्यय तत्परता रेखा है। रेखा चित्र में जब उपभोक्ता के पास X वस्तु की एक भी इकाई नही थी तो वह OP मुद्रा की मात्रा व्यय करने को तैयार था। बाजार में पूर्ण प्रतियोगी मूल्य OP_1 की स्थिति में वह OP_1 कीमत वास्तव में देता है इसलिए PP_1 उपभोक्ता की बचत है। कीमत के घटने पर उप0 की बचत बढ जाती है। पर यदि कीमत बढ जाये तो उपभोक्ता की बचत घट जायेगी।

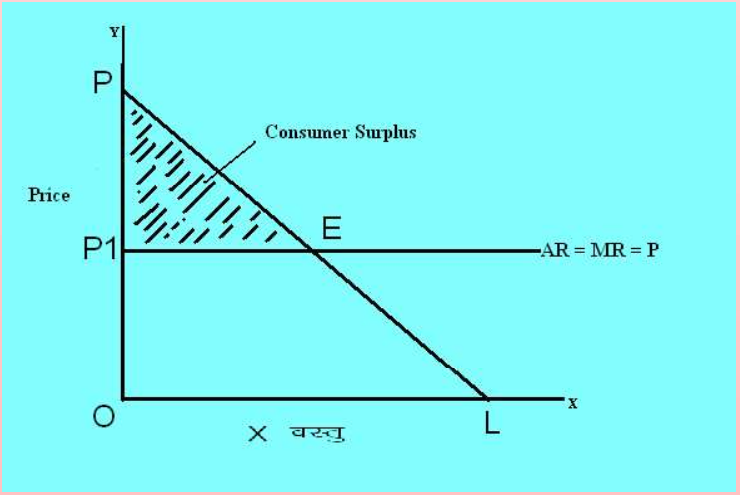

प्रो0 हिक्स का दृष्टिकोणः–

हिक्स के अनुसार उपभोक्ता की बचत की माप उसकी आय की बचत के रूप में करना चाहिए इस प्रकार वस्तु के मूल्य में कमी के कारण उस वस्तु के क्रय में उपभोक्ता की आय में जो बचत होगी उसे उपभोक्ता की बचत कहेंगे। 'उपभोक्ता की बचत मुद्रा की वह मात्रा है जो उसकी आर्थिक दशा में कुछ परिवर्तन के बाद या तो दे दी जानी चाहिए अथवा उससे ले जानी चाहिए, जिससे उपभोक्ता या तो ऊपर उठ जाये अथवा नीचे आ जाये तथा उसी अनधिमान वक्र पर बना रहे जिस पर वह इस प्रकार के परिवर्तन के पूर्व था।

1:– <u>मुद्रा के रूप में उपभोक्ता की बचतः</u>– इस स्थिति में क्रय की जाने वाली वस्तु की मात्रा पूर्व निश्चित है। रेखाचित्र से स्पष्ट है कि उपभोक्ता वस्तु X वस्तु की OX_1 मात्रा क्रय करना चाहता है और वह IC_1 के T बिन्दु पर है। जहां पर PF मुद्रा व्यय करने को तैयार है। बाजार में मूल्य रेखा PL के प्राप्त होने पर वह संस्थिति की स्थिति में वह E बिन्दु पर है जहां पर वह मुद्रा की PC मात्रा का व्यय कर रहा है अतः CF के बराबर उपभोक्ता की बचत है.

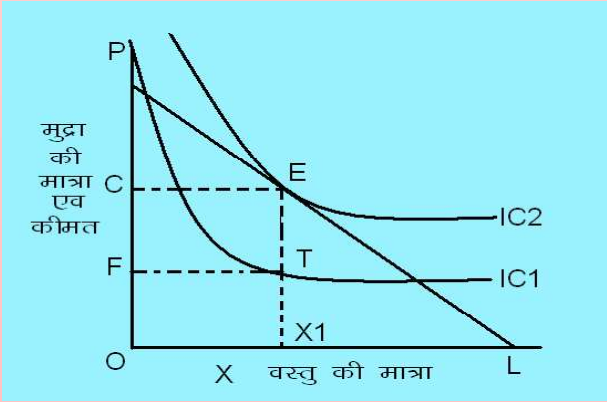

2. वस्तु के रूप में उपभोक्ता की बचत :– इस स्थिति में व्यय की जाने वाली मुद्रा की मात्रा की मात्रा निश्चित है। रेखाचित्र से स्पष्ट है कि उपभोक्ता PC मुद्रा की मात्रा व्यय करना चाहता है तथा वह IC_1के D बिन्दु पर है जहां PC मुद्रा के बदले वह X की OX_1 वस्तु की मात्रा प्राप्त करना चाहता है। पर बाजार मूल्य रेखा PLके ज्ञात होने पर वह IC_2 के E बिन्दु पर संतुलन में है जहां पर वह X की OX_2 के बदले PC मात्रा (मुद्रा) व्यय करेगा। अतः X_1X_2 या DE वस्तु के रूप में उपभोक्ता की बचत हुई।